अनर्ब चक्रवर्ती: दोस्तों, चिली के माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्री गेब्रियल बोरिक आ चुके हैं। कृपया उनका स्वागत करने के लिए खड़े हो जाएं। धन्यवाद। देवियों और सज्जनों, आप अपने हेडफोन से जुड़े सिस्टम पर अंग्रेजी और स्पैनिश भाषा के बीच स्विच कर सकते हैं, अंग्रेजी के लिए चैनल एक और स्पैनिश के लिए चैनल दो है। मंच पर उपस्थित सभी गणमान्यों, श्रोतागण, राजनयिक दल के सदस्यों, सम्मानित शिक्षाविदों, मीडिया प्रतिनिधियों और छात्रों को नमस्कार।

हम यहाँ 53वें सप्रू हाउस व्याख्यान के लिए एकजुट हुए हैं। मैं डॉ. अर्नब चक्रवर्ती, भारतीय वैश्विक परिषद में अनुसंधान अध्येता हूँ। आज का सप्रू हाउस व्याख्यान चिली के माननीय राष्ट्रपति श्री गेब्रियल बोरिक द्वारा दिया जाएगा, विषय होगा- *ग्लोबल साउथ में एक साथ चिली और भारत।* व्याख्यान की अध्यक्षता भारतीय वैश्वकि परिषद की अपर सचिव राजदूत नूतन कपूर महावर करेंगी। महावर महोदया स्वागत भाषण से आरंभ करेंगी, जिसके बाद हम अपने सम्मानित अतिथि, महामहिम श्री गेब्रियल बोरिक, चिली के राष्ट्रपति द्वारा दिए गए 53वें सप्रू हाउस व्याख्यान के साथ आगे बढ़ेंगे। इसके बाद अध्यक्ष और माननीय राष्ट्रपति के बीच एक संक्षिप्त बातचीत होगी।

अब मैं राजदूत नूतन कपूर महावर को अपना स्वागत भाषण देने और कार्यवाही का संचालन करने के लिए आमंत्रित करता हूँ। धन्यवाद, महोदया।

नूतन कपूर महावर: महामहिम, राजनयिक दल के प्रतिष्ठित सदस्यगण, शिक्षाविद और मीडिया एवं छात्रों, हमें आज चिली गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्री गेब्रियल बोरिक की मेज़बानी करते हुए बहुत गर्व महसूस हो रहा है। आज 53वें सप्रू हाउस व्याख्या- *ग्लोबल साउथ में एक साथ चिली और भारत*, का हिस्सा बनने वो आए हैं। भारत के सबसे पुराने और अग्रणी विदेश नीति विचार मंच आईसीडब्ल्यूए में व्याख्यानों की इस प्रतिष्ठित श्रृंखला में पहले भी कई प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों ने भाग लिया है, जिनमें राष्ट्रों और सरकारों के प्रमुख, अंतरराष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय संगठनों के प्रमुख और अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति शामिल हैं।

महामहिम श्री बोरिक का शानदार राजनीतिक करिअर उनके प्रारंभिक वर्षों से ही जुड़ा हुआ है। वे एक प्रगतिशील छात्र नेता, कानून, न्याय और मानवाधिकार शिक्षाविद, सांसद, स्वदेशियों के लिए समावेशिता के पैरोकार रहे हैं जो भारत के समान चिली की बहुसांस्कृतिक पहचान को मान्यता देते हैं, और एक ऐसे नेता हैं जो महिलाओं को महत्वपूर्ण निर्णय लेने वाली भूमिकाएं देकर और देश के लिंग- संवेदनशील विधायी आधार को मजबूत करके उन्हें सशक्त बनाने में विश्वास करते हैं।

वर्ष 2008 में उन्होंने चिली विश्वविद्यालय के छात्र संघ के लिए परामर्शदाता के रूप में चुने जाने के साथ छात्र नेतृत्व में अपनी यात्रा शुरू की, इसके बाद 2009 में लॉ स्टूडेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष की भूमिका

निभाई। छात्रों के पक्ष-समर्थन के प्रति उनके समर्पण ने 2010-11 में छात्र आंदोलन के एक महत्वपूर्ण दौर के दौरान विश्वविद्यालय सीनेटर बने। राष्ट्रपति बोरिक ने 2014 से 2018 और फिर 2018 से 2022 तक डिप्टी पद पर अपनी सेवाएं दीं और ये दो कार्यकाल पूरा किया।

वर्ष 2021 में उन्हें अप्रूवेबल डिग्निडैड आई अप्रूव ऑफ डिग्निटी कोइलिएशन, के लिए राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में नामित किया गया, जिससे उन्हें प्राइमरी में 60% वोट मिले। एक सख्त चुनावी प्रक्रिया के बाद, वे उसी वर्ष सबसे अधिक मतों और भागीदारी के साथ चिली के सबसे युवा राष्ट्रपति चुने गए। दोस्तों, उनके राष्ट्रपतित्व काल में विदेश नीति से संबंधित उनके कार्य की तीन प्रमुख दिशाएं सामने आईं यानि- पर्यावरण, लैटिन अमेरिकी एकीकरण और बहुपक्षवाद।

इनकी फिरोज़ा विदेश नीति जो जलवायु परिवर्तन की चिंताओं को दूर करने के लिए हरित पहलों को महासागरों की रक्षा के लिए नीली पहलों के साथ मिलाने का समर्थन करती है, सार्थक कार्रवाई को बढ़ावा देने के लिए रचनात्मक रूप से तैयार की गई है। इन्होंने दक्षिण ध्रुव का दौरा करने वाले लैटिन अमेरिका के पहले राष्ट्राध्यक्ष बनकर अंटार्कटिका के पर्यावरण के लिए विश्व की चिंता का समर्थन किया। कठोर वैचारिक संरेखणों की अपेक्षा मुद्दा- आधारित सहयोग के उनके मॉडल ने देश के अपने क्षेत्र और उससे आगे के नज़रिए में ताज़ी हवा का झोंका ला दिया है।

उनकी बहुपक्षीय दृष्टि ने संवाद और अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं लोकतांत्रिक निर्णय लेने को प्राथमिकता दी है, अंतरराष्ट्रीय कानून को कायम रखा है, मानवाधिकारों की रक्षा की है, तथा वैश्विक शासन की संस्थाओं में सुधार का आह्वान किया है। वे क्षेत्रवाद को मजबूत करने में विश्वास करते हैं तथा महान शक्तियों की प्रतिद्वंद्विता और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा ने त्रस्त दुनिया में एक पुनर्जीवित पितृसत्तात्मक, महान मातृभूमि की मांग करते हैं। अपनी विदेश नीति में रणनीतिक स्वायत्तता के लिए चिली की प्रतिबद्धता इस संबंध में भारत के अपने नज़रिए से मेल खाती है।

राष्ट्रपति बोरिक की प्रगतिशील विदेश नीति भारत की बढ़ती वैश्विक पहुँच के साथ जुड़ी हुई है, जो व्यापार, प्रौद्योगिकी, ऊर्जा और सांस्कृतिक आदान- प्रदान में सहयोग को बढ़ावा देती है और सतत विकास एवं महत्वपूर्ण खनिजो में आपसी हितों पर उल्लेखनीय ज़ोर देती है, जहाँ चिली एक वैश्विक नेता है। दोनों देशों के नेतृत्व ने व्यापार संबंधों को गहरा करने पर ध्यान केंद्रित किया है, विशेष रूप से फार्मास्यूटिकल्स, स्वास्थ्य सेवा और नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में।

चिली आईटी और डिज़िटल इंफ्रास्ट्रक्चर में भारत की प्रगति का लाभ उठाने के लिए भी तैयार है। कृषि क्षेत्र में भी द्विपक्षीय सहयोग की अपार संभावनाएं हैं, जैसा कि अंतरिक्ष क्षेत्र में है। भारत साझा उद्देश्यों

को प्राप्त करने के लिए आपदारोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन और अंतराष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसी अपनी वैश्विक पहलों में चिली की भागीदारी का स्वागत करता है।

महामहिम, आज हम एक ऐसे विश्व को देख रहे हैं जो युद्धों से लेकर वित्तीय असमानताओं तक, विभिन्न चुनौतियों से घिरा हुआ है। कोविड-19 महामारी ने हमारी प्रणालियों की कमज़ोरियों को उजागर कर दिया है और इसके आर्थिक प्रभावों ने अभूतपूर्व नुकसान पहुँचाया है। अपने सबक सीखकर, हम एक ऐसे मोड़ पर खड़े हैं जहाँ आज अपनाई गई नीतियाँ हमारे सामूहिक भविष्य को आकार देंगी। ग्लोबल साउथ ने अक्सर उन संरचनात्मक असमानताओं के बारे में एक स्वर में बात की है जो अभी भी मौजूद हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वैश्विक विकास समझौते का प्रस्ताव रखा है, जिसमें विकास के लिए व्यापार, क्षमता निर्माण, प्रौद्योगिकी साझाकरण और सतत परियोजनाओं के लिए रियायती वित्त पोषण पर ध्यान केंद्रित किया गया है। चिली ने ग्लोबल साउथ और दक्षिण- दक्षिण संबंधों को अपनी विदेश नीति के लिए महत्वपूर्ण माना है जो महामहिम, एक अधिक न्यायसंगत, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के आपके नज़रिए को दर्शाता है।

आज, जब हम भारत और चिली के बीच बढ़ती साझेदारी का जश्न मना रहे हैं, हम उन मूल्यों को भी पहचानते हैं जो हमें लोकतंत्र, स्थिरता, आर्थिक समानता और दक्षिण- दक्षिण एकजुटता के हिमायत से जोड़ते हैं। भारत और चिली के बीच संबंध एक और विशेष महत्व रखते हैं। हम दोनों प्राचीन सभ्यताओं के उद्गम स्थल हैं। हम उन परंपराओं, दर्शन और ज्ञान प्रणालियों के घर हैं जो हजारों साल पुरानी हैं, जो हमें अपने लोगों के लाभ के लिए अपने सहयोग को मजबूत करने के लिए पर्याप्त कारण देती हैं।

इसके साथ ही, मैं पूरे गर्व के साथ चिली गणराज्य के माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्री गेब्रियल बोरिक को *ग्लोबल साउथ में एक साथ चिली और भारत* विषय पर 53वें सप्रू हाउस व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित करती हूँ। राष्ट्रपति महोदय, कृपया अपने विचार हमसे साझा करें।

महामहिम, श्री गेब्रियल बोरिक: यहाँ उपस्थित सभी लोगों को नमस्कार। मैं समझ सकता हूँ कि अनुवाद का कार्य साथ- साथ चल रहा है। है न? इस ऐतिहासिक स्थल पर आपके शानदार स्वागत का बहुत- बहुत धन्यवाद, निदेशक के अनुसार यह पहला अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्र है जिसकी स्थापना 1947 में ब्रिटिश साम्राज्य से भारत की आज़ादी से भी पहले हुई थी।

यह वास्तव में सम्मान की बात है कि इस स्थान के दरवाज़े हमारे लिए बातचीत और हमारे लोगों के बीच दोस्ती को प्रगाढ़ करने एवं इन अशांत समय में चिली के भू- राजनीतिक नज़रिए को और भी गहरा करने के लिए खोले गए हैं। हम प्रधानमंत्री मोदी द्वारा हमें इस राजकीय सफ़र के लिए दिए गए निमंत्रण के

बहुत आभारी हैं, जैसा कि हमने अन्य अवसरों पर उल्लेख किया है, यह चिली के राष्ट्रपति लागोस और बैचेलेट के पदचिन्हों पर चलते हुए 16 वर्षों में चिली के किसी नेता का पहला दौरा है। हमारे साथ मंत्रियों, सांसदों, व्यापारियों, शिक्षकों, कलाकारों और श्रमिकों का एक बड़ा प्रतिनिधिमंडल भी आया है, जो पहली बार देश में आए हैं....

वे चिली की विविधता का हिस्सा हैं और चिली एवं भारत के बीच सहयोग और सहभागिता के लिए जबरदस्त अवसरों को दर्शाते हैं। तीन शहरों में, हमारे पास एक व्यापक कार्य एजेंडा होगा जो राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में इस द्विपक्षीय संबंध को गहरा करने का प्रयास करेगा। हमारा हमेशा यह उद्देश्य होता है, जिसे हम नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते, कि इन यात्राओं पर हम जो कुछ भी करते हैं उसका उद्देश्य हमारे लोगों के जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाना और लाभ पहुँचाना है न कि खुद को सांत्वना देना।

जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी, जो अब वाणिज्य मंत्री हैं, ने कल याद किया, हमारा देश उस ऐतिहासिक दिन पर भारत के साथ खड़ा था जब उन्होंने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की थी। वर्ष 1947 में, युआन मारिन चिली सरकार के विशेष दूत के रूप में मौजूद थे, और कुछ साल बाद हमने नई दिल्ली में अपना पहला दूतावास खोला।

यह एक जिंदादिल, विविधतापूर्ण देश है। आज, यह विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला देश है। सबसे बड़े देशों में से एक। हम यह जानने आए हैं कि हमें क्या एकदुट करता है और हमारे संबंधों को मजबूत करता है। चिली एक मध्यम आकार का देश है, जो विश्व के दक्षिणी भाग में स्थित है। लेकिन हम विश्व के लिए खुले हैं। हमारा दृढ़ विश्वास है कि मैत्री की राजनीति और गठबंधन की रणनीतियां राष्ट्रपति पद से कहीं आगे जाती हैं लेकिन राष्ट्र की नीतियों और बड़ी संख्यों में देशों के साथ संबंधों, व्यापार संबंधों के रूप में यह गारंटी देती है कि हम भविष्य के नायक हो सकते हैं। भारत को एशिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने का गौरव भी प्राप्त है। यह अपनी स्वतंत्रता के बाद से ही ऐसा ही रहा है। चिली में भी एक प्राचीन गणतंत्र परंपरा है जो 1973 में 17 काले वर्षों के लिए क्रूरतापूर्वक बाधित हुआ लेकिन 1990 में लोकतंत्र को फिर से बहाल करने के बाद गणतंत्र की परंपरा भी एक बार फिर से कायम हुई। तब से, हमने इसकी नींव को मज़बूत करने के लिए अथक प्रयास किए हैं, एक ऐसी नींव जो हमें एकजुट करती है और एक दीर्घकालिक राज्य नीति बन गई है। लोकतंत्र की गहराई और सुधार के लिए स्थायी खोज़ हमेशा होती है।

जैसा कि भारतीय संविधान के प्रारूपकारों में से एक और मानवाधिकार अधिवक्ता भीमराव रामजी अंबेडकर ने कहा था,- एक व्यक्ति, एक वोट का सिद्धात राजनीतिक समानता तो प्रदान करता है लेकिन आर्थिक और सामाजिक असमानताओं को दूर नहीं करता। एक विरोधाभास जिसे उस समय, 1950 के दशक की शुरुआत में, उन्होंने जल्द- से- जल्द खत्म करने का आह्वान किया था। यह आह्वान दशकों पहले तैयार किया गया था और आज भी मान्य है। हम इस विश्वास से प्रेरित हैं कि अगर हम असमानताओं को कम

करने और विकास के लाभों के बेहतर वितरण की दिशा में आगे बढ़ने में सफल होते हैं तो हमारे लोकतंत्र पूर्ण और मजबूत होंगे। इस प्रयास में, हम आज खुद को भारत और चिली में पाते हैं, जहाँ हम अपने देशों में गरीबी को अलग- अलग स्तरों पर कम करने में कामयाब रहे हैं। हालाँकि, कुछ बदलाव हुआ है। मुझे लगता है कि इसे यहाँ उठाना एक राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। 20वीं सदी के दौरान, एक और शायद 1918 में जर्मन सोशल डेमोक्रेट्स की जीत के बाद से.....

स्पार्टाकस समूह, जिसने फ्रेडरिक गेबर्ट के नेतृत्व वाले लोगों को रोजा लक्ज़मबर्ग और कार्ल लीसनर के खिलाफ खड़ा किया था, पश्चिमी यूरोप में एक ऐसी प्रणाली के रूप में स्थापित किया गया था जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद धीरे- धीरे आगे बढ़ी और एक सामाजिक लोकतंत्र में समेकित हुई, जिसने संसदीय लोकतंत्रों के माध्यम से नागरिकों की जरूरतों को संस्थागत रूप से पूरा किया। पश्चिमी यूरोप में एक ऐसी व्यवस्था बनाई गई जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद धीरे- धीरे आगे बढ़ी और सामाजिक लोकतंत्र में तब्दील हो गई, जिसने संसदीय लोकतंत्रों के माध्यम से आबादी, विशेष रूप से सबसे वंचितों, की जरूरतों को संस्थागत रूप से पूरा किया। इसे न्याय की आवश्यकता के रूप में देखा गया और साथ ही, राजनीतिक क्रांति, सामाजिक क्रांति से अलग मार्ग के रूप में भी देखा गया, जिसे 1917 में सोवियत रूस से प्रस्तावित किया गया था।

साम्यवाद के प्रति अक्सर अतार्किक भय का अर्थ था कि पश्चिमी समाजों में कई प्रकार की रियायतें दी गईं जो अन्यथा नहीं दी जा सकती थीं। लेकिन यह केवल पश्चिमी यूरोप की बात नहीं थी। जैसे, सदी के आरंभ में विल्सनियन सिद्धांत के बाद प्रगति के लिए गठबंधन को याद करें, जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रचारित किया गया था, जिसमें कहा गया था कि अमेरिका अमेरिकियों के लिए है। किन्तु, अमेरिकियों को अमेरिका के अलग- अलग राष्ट्रों के निवासियों के रूप में नहीं बल्कि केवल संयुक्त राज्य अमेरिका या उसके शासक अभिजात वर्ग के निवासियों के रूप में समझा गया।

इसने अंतरराष्ट्रीय संबंधों को समझने के हमारे तरीके को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया। एक समय पर यूनाइटेड फूड कंपनी के माध्यम से ग्वाटेमाला में हिंसक हस्तक्षेप से, यह कम आक्रामक सैन्य नीति में बदल गया, जिसमें डोमिनिकन गणराज्य, क्यूबा, निकारागुआ में विभिन्न प्रकार के तख्तापलट और यहाँ तक कि अन्य देशों में विभिन्न हस्तक्षेपों का समर्थन करना शामिल था। यह कम आक्रामक सैन्य नीति में बदल गया, लेकिन एक ऐसी नीति जिसने यह समझा कि क्रांति से बचने के लिए शक्ति और धन का बेहतर वितरण आवश्यक था। यह एक तरह से प्रगति के लिए गठबंधन था, जिसका चिली में बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव था।

उदाहरण के लिए 1960 के दशक के उत्तरार्ध में राष्ट्रपति फ्रेडी मोंटाल्बा द्वारा प्रचारित कृषि सुधार। हालाँकि, सोवियत संघ गायब हो गया। सोवियत संघ अपने कार्यान्वयन के साथ आने वाली सभी त्रासदियों के साथ गायब हो गया। अक्सर, सोवियक संघ ने अन्य लोगों की स्वतंत्रता और स्वतंत्रता के लिए जो अवमानना दिखाई, उसके साथ और इसलिए मैं यहाँ शीत युद्ध के उस दौर का बचाव करने या उसका झंडा उठाने के लिए नहीं आया हूँ। मुझे दीवारें पसंद नहीं हैं, मुझे पुल पसंद हैं। लेकिन आज मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि एक बार जब सोवियत संघ का पतन हो गा और इसलिए साम्यवाद का डर खत्म हो गया और जब कुछ लोगों ने घोषणा की... इतिहास का अंत।

दुनिया में संचय, धन और शक्ति की एक नई प्रक्रिया बनी, जिसका आज तक, प्रगतिशील क्षेत्रों से और विभिन्न विश्व नज़रियों से, हम सामना करने के लिए कोई स्पष्ट समाधान नहीं खोज पाए हैं। यह शायद अपने चरम पर पहुँच रहा है। कुछ महीने पहले, संयुक्त राज्य अमेरिका के नए राष्ट्रपति के शपथ ग्रहण समारोह में, जहाँ हमने विश्व के बड़े अरबपतियों- बिबटेक्स (BibTeX) के, को देखा। जेफ बेजोस, लैरी ब्रेन, एलन मस्क, मार्क ज़ुकरबर्ग, दूसरों के प्रति सम्मान के साथ। मैं इसका उल्लेख क्यों कर रहा हूँ? क्योंकि मुझे लगता है कि उभरते देशों से, नई- नई वैश्विक चुनौतियों के साथ, हम एक नया राजा बनाने में समर्थ हैं। नई वैश्विक चुनौतियों के साथ, हमें इस बात पर पुनर्विचार करने में सक्षम होना चाहिए कि कैसे तकनीकी परिवर्तन हमारे समाज के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। 18वीं सदी के अंत और 19वीं सदी की शुरुआत में औद्योगिक क्रांति ने हमारे उत्पादन के तरीके में क्रांति ला दी और इसके साथ ही एक ऐसी चीज़ भी आई जो बहुत महत्वपूर्ण थी, वह थी- श्रमिकों का संगठन, जिन्होंने स्वयं को एक आम जगह- कारखाना, से संगठित किया। आज समय बदल गया है।

वैश्वीकरण के दौर में 19वीं और 20वीं सदी की पुरानी ट्रेड यूनियनवाद अब संभव नहीं है। हमें इशके बारे में नए तरीके से सोचना होगा और इसीलिए मैं आपको नोबेल पुरस्कार विजेता डेरॉन ऐसमोग्लू की साइमन जॉनसन के साथ नई किताब का एक छोटा सा अंश पढ़ना चाहूँगा जो निम्नलिखित बिंदु पर ज़ोर देता हैः आज चिली और भारत कोई अपवाद नहीं हैं। दुनिया की अधिकांश आबादी हमारे पूर्वजों की तुलना में बेहतर जीवन जी रही है क्योंकि शुरुआती औद्योगिक समाजों में नागरिकों और श्रमिकों ने स्वयं को संगठित किया, प्रौद्योगिकी और कार्य स्थितियों के बारे में अभिजात वर्ग के निर्णयों को चुनौती दी और नवाचार के लाभों को अधिक समान रूप साझा करने के लिए नए तंत्रों के निर्माण को मजबूर किया। आज हमें फिर से वही काम करने की जरूरत है।

अच्छी खबर यह है कि हमारे पास अविश्वसनीय साधन हैं. जैसे कि एमआरआई (MRI), इंटरनेट, एमआरएनए (mRNA) वैक्सीन, औद्योगिक रोबोट, शानदार प्रसंस्करण क्षमता वाले चिप्स, और कई चीजों पर डेटा की एक विशाल मात्रा जिसे हम पहले माप भी नहीं सकते थे। इन सभी आविष्कारों का प्रयोग वास्तविक समस्याओं को हल करने के लिए करना काफी संभव है लेकिन तभी जब हम इन अविश्वसनीय क्षमताओं का प्रयोग लोगों की मदद करने में सक्षम हों। हालाँकि ऐसा लगता है कि यह वह दिशा नहीं है जिस पर एल मुंडो इन दिनों आगे बढ़ रहा है। इतिहास के सबक के बावजूद, आज का प्रमुख प्रवचन उसी दृष्टिकोण पर वापस आ गया है जो 250 वर्ष पूर्व ग्रेट ब्रिटेन में प्रचलित था। हम अंधे आशावाद से प्रभावित गहन अभिजात्य समय में रह रहे हैं।

बड़े फैसले लेने वाले लोग एक बार फिर प्रगति के नाम पर पैदा की गई पीड़ा के प्रति उदासीन हो जाते हैं। मैं इस संवाद में जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि प्रगति कभी भी एक स्वचालित प्रक्रिया नहीं होती। यह एक अनिवार्य मार्ग नहीं है जिस पर चलने के लिए हमें बाध्य किया जाता है। कृपया मेरी बात का गलत अर्थ न निकाला जाए, इस बारे में कोई मनमाना विवाद न हो; हम प्रगति चाहते हैं। हम विकास चाहते हैं लेकिन हम प्रगति और विकास के लिए अपना रास्ता खुद तय करना चाहते हैं न कि इसे हमारे लिए एक छोटे, नए तकनीकी कुलीनतंत्र द्वारा परिभाषित किया जाना चाहिए। प्रौद्योगिकी पर एक नए, अधिक समावेशी नज़रिया तभी विकसित हो सकता है जब सामाजिक शक्ति का आधार भी बदल जाए। निस्संदेह इसके लिए 19वीं सदी और कई अन्य समयों की तरह बदलाव की जरूरत है और इसलिए इतिहास को पढ़ना और समझना महत्वपूर्ण है। अलग- अलग तर्कों एवं संगठनों का उदय जो प्रमुख सोच को चुनौती दे सकते हैं। यही कारण है कि हमें लोकतंत्र की रक्षा करनी चाहिए। हमें वर्तमान नज़रिए को चुनौती देना चाहिए और तकनीकी प्रगति को बहुत छोटे अभिजात वर्ग के नियंत्रण से मुक्त कराना चाहिए। आज यह 19वीं सदी के ब्रिटेन या 20वीं सदी के संयुक्त राज्य अमेरिका की तुलना में अधिक कठिन हो सकता है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि यह कम महत्वपूर्ण है और हमें इसे हासिल करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। इसे हासिल करने के लिए आज बहुपक्षवाद ही कुंजी है। आज बहुपक्षवाद ही हमारा मार्ग है।

चिली। चिली में, हम इस विश्वास से प्रेरित हैं कि अगर हम असमानताओं को कम करने और विकास के लाभों के बेहतर वितरण की दिशा में आगे बढ़ने में कामयाब होते हैं तो लोकतंत्र मजबूत और पूर्ण होगा, हालाँकि, इसे अलग रखे बिना। हम अपने देश में इसी दिशा में काम कर रहे हैं और मैंने जो देखा और अध्ययन किया है, उससे पता चलता है कि भारत में भी यही रास्ता अपनाया जा रहा है। और इसलिए मैं कई पहलुओं में भारत और चिली की समानता और एक-जैसी स्थिति पर ज़ोर देना चाहता हूँ। द्विपक्षीय और बहुपक्षीय व्यापार के महत्व पर- आपूर्ति श्रृंखलाओं की सुरक्षा में, निवेश को बढ़ावा देने में, सार्वजनिक-निजी सहयोग में, बहुपक्षवाद को मज़बूत करने में और लोकतंत्र एवं मानवाधिकारों की सुरक्षा और रक्षा पर हमारे द्वारा दिए जाने वाले महत्व पर।

ये संयोग, जो इन अशांत समय में कम नहीं हैं, ने, हमें वर्षों से एक ठोस और स्थिर संबंध बनाए रखने दिए हैं। चिली ने भारत को अपनी विदेश नीति के लिए प्राथमिकता माना है। आज यहाँ होना संयोग की बात नहीं है। हमारे विदेश मंत्री अल्बर्टो वैन क्लावेरेन और विदेश मंत्रालय की टीम जो इस दौरे के दौरान होने वाली हर एक घटना को सफल बनाने के लिए आश्चर्यजनक रूप से काम कर रही है, के साथ, हमने महीनों पहले चिली सरकार के महल ला मोनेडा में मुलाकात की थी, ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि हमारी सरकार के दौरान हम किस प्रकार के दौरे करने वाले हैं। हमने मिलकर यह निर्धारित किया कि भारत उन मूलभूत स्थानों में से एक है क्योंकि आज हमारे पास बहुत सारी क्षमताएं हैं जिनका हम पूर्ण लाभ नहीं उठा पा रहे हैं। बिना किसी संदेह के, मैं यह कह सकता हूँ कि यह दौरा हमें इसे बहुत मजबूती से मजबूत करने का अवसर देगा।

प्रौद्योगिकी, नवाचार, नवीकरणीय ऊर्जा और डिज़िटल अवसंरचना में भारत का नेतृत्व हमारे देश के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारी यात्रा, जिसमें मुबंई और बेंगलुरु जाना भी शामिल है, हमें भारत के साथ अपने संबंधों को एक राष्ट्र नीति और प्रयास के रूप में मजबूत बनाने में सक्षम बनाएगी, जिसे, निस्संदेह, उस सरकार से कहीं आगे तक प्रक्षेपित की जाएगी जिसकी अध्यक्षता करने का मुझे सम्मान मिला है। चिली में, सरकार का कार्यकाल चार वर्षों का होता है और दोबारा सत्ता में आने की उनकी संभावना नहीं होती, जो मेरे नज़रिए से दीर्घकालिक परियोजनाओं को विकसित करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है। मुझे इस बात का कोई संदेह नहीं है कि जो मेरे बाद आएंगे, चाहे उनकी राजनीतिक विचारधारा कुछ भी हो, वह विदेश नीति को निरंतरता देंगे क्योंकि अलग कोई एक सकारात्मक बात है, जो, आज विभिन्न राजनीतिक क्षेत्रों के सांसदों द्वारा दर्शाई गई है तो वह यह है कि चिली में हम मौन रूप से इस बात पर सहमत हैं कि विदेश नीति एक राष्ट्र की नीति होती है और इसलिए, यह रोज़मर्रा की राजनीति प्रतिद्वंद्विता और इधर- उधर की बातों से परे है।

भारत अब हमारा सातवां (7) सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है और मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि भविष्य में विकास की बहुत संभावना है। चिली केवल एक देश पर निर्भर नहीं रहना चाहता। एक ही देश पर बहुत अधिक निर्भर होने की कठिनाइयों से विश्व परिचित है, जैसा कि जर्मनी के मामले में रूसी से लिए जाने वाले गैस के मामले में हुआ था। इसलिए भारत के साथ हमारे व्यापार में वृद्धि, जो पहले से ही उल्लेखनीय रूप से बढ़ रही है- हाल के वर्षों में 34%, 2023 के संबंध में पिछले वर्ष 35%- सकारात्मक है, और निर्यात में 71% से अधिक की वृद्धि दर्ज की गई है लेकिन यह अभी भी पर्याप्त नहीं है। हमारे पास जितनी भी क्षमता है, वह अभी भी पर्याप्त नहीं है।

इस विकास पथ को मजबूत करने और जारी रखने के लिए, एक व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौते पर बातचीत करके हमारे आर्थिक व्यापार संबंधों को गहरा करने का समय आ गया है। एक एसईपीए (SEPA)। हमने कल प्रधानमंत्री मोदी, विदेश मंत्री के साथ सहमति जताई और आज सुबह भारत के व्यापार मंत्री के साथ इसकी पुष्टि की। हमने सभी पक्षों की सद्भावना के साथ इस वर्ष इसे प्राप्त करने की समय- सीमा भी तय की है। बात यह है कि चिली और भारत ऐसे सिद्धांतों को साझा करते हैं जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण हैं। शीत युद्ध समाप्त होने के बाद से, हम दोनों रणनीतिक स्वायत्तता का बचाव करते हैं लेकिन इसका मतलब अलगाव नहीं है, बल्कि अलग- अलग क्षेत्रों के साथ बहुपक्षीय गठबंधनों की विविधता है। अब चूँकि शीत युद्ध समाप्त हो चुका है, हम दोनों एक रणनीतिक स्वायत्तता की रक्षा करते हैं जिसका अर्थ अलगाव नहीं बल्कि अलग- अलग क्षेत्रों के साथ बहुपक्षीय गठबंधनों की विविधता है।

हमने अभी- अभी सऊदी अरब में एक दूतावास खोला है- विदेश मंत्री महोदय, मैंने ठीक कहा ना? जी हाँ। हमने हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात का दौरा किया है। हमने यूरोपीय संघ के साथ एलामा संधि को अपडेट किया है। हमने संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ मुक्त व्यापार समझौते के 20 वर्ष पूरे होने का जश्न मनाया है, हमने पीईसी (PEC) की विनिमय गतिविधियों में सक्रिए रूप से भाग लिया है। और चीन के साथ भी हमारे विशेष संबंध हैं। निस्संदेह भारत या भारतीय उपमहाद्वीप उन देशों में से एक है जिसके साथ हम इन ढांचे में, चिली के इस नेटवर्क में अपने संबंधों को प्रगाढ़ बनाना चाहते हैं। हम वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग के क्षेत्र में और आर्थिक पूरकता की क्षमता को भी साझा करते हैं जिसका हमें लाभ उठाना चाहिए।

कृषि व्यवसाय, डिजिटल अर्थव्यवस्था, फिल्म उद्योग और लिथियम एवं तांबा जैसे महत्वपूर्ण खनिज प्रमुख क्षेत्र हैं। चिली अपनी राष्ट्रीय लिथियम और हरित हाइड्रोजन रणनीतियों के माध्यम से डीकार्बोनाइज़ेशन एजेंडे में योगदान देना चाहता है, इस नज़रिए को साझा करते हुए ऊर्जा संक्रमण शायद मानवता के रूप में हमारे सामने आने वाली सबसे प्रमुख पीढ़ीगत चुनौती है। देवियों और सज्जनों, यह बेहद उथल- पुथल का समय है। यह धमकियों, एकतरफा टैरिफ का समय है। यह अंतरराष्ट्रीय कानून और देशों की क्षेत्रीय संप्रभुता की अवहेलना का भी समय है। हमारे जैसे मध्यम आकार के देश किसी खास नेतृत्व के साथ स्वयं को जोड़ना नहीं चाहते हैं।

ऐसा नहीं है कि राष्ट्रपति ज़ेलेंस्की या महमूद अब्बास के साथ मेरा कोई विशेष संबंध है। मुद्दा यह है कि चिली को विश्व में सम्मान दिलाने के लिए, हमारा सबसे अच्छा साधन अंतरराष्ट्रीय कानून है। इसलिए, आतंकवाद की निंदा, साथ ही एकतरफा आक्रामकता की निंदा, हमारी विदेश नीति का एक अनिवार्य हिस्सा है और मुझे पता है कि यह कुछ ऐसा है जिसे हम भारत के साथ साझा करते हैं।

आज सुबह, क्षमा करें, कल सुबह, प्रधानमंत्री मोदी के साथ, हमने इस बात पर चर्चा की कि इस बढ़ते तनावपूर्ण माहौल पर किस प्रकार प्रतिक्रिया दी जाए और जवाबों में से एक है- हमारे देशों के नेटवर्क को मज़बूत करना, दोस्ती और आदान- प्रदान को बढ़ावा देना, विश्व व्यवस्था में अधिक विविधता के लिए रास्ता बनाना। हमारे मूल देशों में ऐसे लोग होंगे जो पूछेंगे कि इन यात्राओं का क्या मतलब है? क्या वे केवल इधर- उधर घूमने जा रहे हैं या तस्वीरें खींचवाने जा रहे हैं? आज आप जो हमारे साथ हैं, तथ्यों की पूरी जानकारी के साथ कह सकेंगे कि ऐसा नहीं है। हम अपने लोगों की भलाई के लिए काम कर रहे हैं क्योंकि सांता बारबरा या मल्लारूको घाटी जैसी जगहों पर, जहाँ अलग- अलग प्रकार के फल उगाए जाते हैं, या कोलचागुआ की घाटियाँ, जिसमें अच्छे वेतन वाले कर्मचारियों की संख्या ज्यादा होगी क्योंकि हम एक ऐसा बाज़ार खोल रहे हैं जो चिली में अब से पहले नहीं था। ये किसान परिवार हैं, किसान परिवार की खेती जो चिली की दीर्घकालिक विदेश नीति से लाभान्वित होगी।

हम खनन उद्योग के बारे में बात कर रहे हैं, जहाँ हम निश्चित रूप से अपने समुदायों के साथ बेहतर संबंध बनाने के लिए अपनी प्रथाओं में सुधार करने में सक्षम होंगे। या चिली फिल्म उद्योग, जिसे विकसित होने के लिए बहुत कुछ करना है। हमें बॉलीवुड से सीखना होगा। उद्यमिता या शिक्षकों का उल्लेख नहीं करना चाहिए जो आज सार्वजनिक शिक्षा, एमिलिया लास्कर या लिसेओ 1 के महान प्रयासों के साथ, अपने छात्रों को कक्षा में अलग- अलग तकनीकों को शामिल करने के लिए प्रेरित करके बदलाव ला रहे हैं और जो भारत में शिक्षकों एवं छात्रों द्वारा किए जा रहे नवाचारों को साझा करने में सक्षम होंगे। जैसा कि मैंने पहले कहा, हम पर्यावरण के सम्मान में भी दिलचस्पी रखते हैं और संबंधित चिंता को साझा करते हैं।

दोनों देशों ने राष्ट्रीय अधिकार क्षेत्र से परे जैव विविधता पर बीबीएनजे (BBNJ) समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। निश्चित रूप से सभी ने प्लास्टिक के इन बड़े द्वीपों को देखा है जो हमारे महासागरों में तैर रहे हैं, जैव- विविधता को प्रदूषित और संकट में डाल रहे हैं, जो अंततः हमारे समाज को भी प्रभावित कर रहे हैं। चिली ने बीबीएनजे (BBNJ) महासचिवाल की मेज़बानी करने की पेशकश की है और हमें आशा है कि भारत भी इसका समर्थन करेगा। मैं दक्षिण- दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देने में भारत की अग्रणी भूमिका पर भी प्रकाश डालता हूँ। और मैं अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, आपदा रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन जैसे अंतरराष्ट्रीय सहयोग संगठनों को बनाने और उनका नेतृत्व करने के लिए इसकी सराहना करता हूँ और हम दोनों बहुपक्षीय निकाय में सक्रिए रूप से एकीकृत होने के लिए काम कर रहे हैं।

हमने जी-20 शिखर सम्मेलनों में एक साथ भाग लिया है, जो विश्व की 20 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं हैं, जिनमें से हम सदस्य नहीं है लेकिन चूंकि चिली का विश्व भर में महत्व है इसलिए हमें आमंत्रित किया गया है। बीते वर्ष, हमने भारत द्वारा आयोजित *वॉयस ऑफ द ग्लोबल साउथ* शिखर सम्मेलन में भाग

लिया था और इस वर्ष हम ब्रिक्स बैठक में भी संयुक्त भागीदार होंगे। इसके अलावा, चिली संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के आर्थिक और राजनीतिक शासन दोनों में आवश्यक सुधार के लिए एक दृढ़ समर्थक रहा है। आप सब को याद होगा, व्यक्तिगत रूप से नहीं क्योंकि मुझे लगता है कि उपस्थित लोगों में से कोई भी उस समय पैदा भी नहीं हुआ था, लेकिन आपके अध्ययन से, राष्ट्र संघ की विफलता। संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने राष्ट्रपति, राष्ट्रपति विल्सन की इच्छा के बावजूद इसमें शामिन नहीं होने का फैसला किया था। और समझौता न हो पाने के कारण राष्ट्र संघ विफल हो गया। जब जापान ने चीन पर हमला किया और राष्ट्र संघ ने उसकी निंदा की, तो इसकी प्रतिक्रिया केवल हमले से पीछे हट जाना नहीं थी, बल्कि राष्ट्र संघ से बाहर हो जाना भी था।

संयुक्त राष्ट्र से अलग होने का यह विचार जाना- पहचाना लगता है क्योंकि यह आज हमारे कुछ समाजों में व्याप्त है। हमें अप्रभावीता के इस स्तर तक पहुँचने से रोकने के लिए सुधारों की जरूरत है। एक अधिक समावेशी सुरक्षा परिषद, जहाँ भारत या ब्राज़ील जैसा शक्तिशाली देश स्थायी सदस्य हो और उसके पास वीटो पावर न हो। इन मुठभेड़ों और संयोगों में, भारत और चिली ने अपने इस विश्वास को पुख्ता किया है कि कोई भी देश, चाहे वह सबसे शक्तिशाली देश ही क्यों न हो, जलवायु संकट, महामारी, डिजिटल क्रांति या अंतराष्ट्रीय संगठित अपराध जैसी घटनाओं का अकेले सामना नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए हमने बहुत सारी त्रासदियां देखी हैं, कुछ महीने पहले स्पेन में आई बाढ़; संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया में लगी भीषण आग; या चिली में जो हमने अनुभव किया है, वहाँ भी भीषण आग लगी थी जिसमें हज़ारों हेक्टेयर क्षेत्र जल कर राख हो गया; या दो साल पहले सर्दियों में आई बाढ़। म्यांमार और थाईलैंड में आए भूकंप का तो ज़िक्र ही नहीं किया जा सकता। सच तो यह है कि हमें एख- दूसरे की जरूरत है। हमें एक जीवंत संयुक्त राष्ट्र की जरूरत है। हमें विश्व स्वास्थ्य संगठन की जरूरत है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारा यह विश्वास कायम रहे कि विज्ञान जीवन बचाता है। हमारे देश में ऐसे लोग भी हैं जो टीकों की प्रभावशीलता को नकार रहे हैं। दूसरे देशों में, खसरे का प्रकोप है, जो वर्षों से नहीं देखा गया था, यह वास्तव में वैज्ञानिक इनकारवाद का परिणाम है।

हम इन दशकों में साथ काम करते हुए सभ्यतागत प्रगति से पीछे नहीं हट सकते। इस संबंध में, मुझे कोई संदेह नहीं है कि हम भारत के साथ मिलकर काम करेंगे। मैं आपको यह भी बताना चाहूँगा कि हम भारत के साथ मिल कर काम करेंगे। मैं आपको यह भी बताना चाहूँगा कि चिली से, हम आपकी संस्कृति में रुचि रखते हैं। न केवल योग या आयुर्वेद में, जो शायद सबसे लोकप्रिय हैं बल्कि यह भी समझना होगा कि कैसे सिंधु घाटी की सभ्यताएं, जो चीन के साथ मिलकर शायद आज निरंतरता के नज़रिए से सबसे लंबे समय तक जीवित रहने वाली सभ्याताएं हैं, अपनी परंपराओं को जीवित रखने और उन्हें अपने विश्व नज़रिए में शामिल करने में कामयाब रहीं।

समग्र रूप से समझना, जिस प्रकार हम एक दूसरे से जुड़े हैं और केवल प्रतिस्पर्धा या भौतिकवाद से नहीं। मैं आज आप सबकी उपस्थिति के लिए, निमंत्रण के लिए फिर से धन्यवाद देता हूँ। आपके माध्यम से मैं भारत की सरकार और यहाँ के नागरिकों को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने हमारा स्वागत इतनी गर्मजोशी से किया। मैं स्वीकार करता हूँ कि इन विशाल पोस्टरों को देखकर मैं थोड़ा शर्मिंदगी महसूस कर रहा हूँ लेकिन मैं एक तरह से आभारी भी हूँ। मुझे हमारे देशों, हमारी संस्कृतियों के बीच संवाद की बहुत आशा है। मुझे भविष्य के लिए बहुत उम्मीद है। मैं उन लोगों में से हूँ जो स्वयं को जिद्दी आशावादी घोषित करते हैं। मेरा मानना है कि हमारे पास इन तकनीकी परिवर्तनों को अपने लोगों के लिए बेहतर कल्याण की दिशा में मोड़ने की संभावना है। ग्लोबल साउथ से, हमारे पास सहयोग और साथ मिल कर काम करने की क्षमता है जो आने वाले दशकों में निर्णायक हो सकती है। हम उस क्षमता को बढ़ावा देने, अपने लोगों के बीच भाईचारे को अपनाने, एक- दूसरे से सीखने और एक बेहतर विश्व के लिए मिल कर काम करने के लिए यहाँ हैं। आप सभी का बहुत- बहुत धन्यवाद।

नूतन कपूर महावर: महामहिम, आपका बहुत- बहुत धन्यवाद। हम चिली गणराज्य के माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्री गेब्रियल बोरिक के अत्यंत आभारी हैं जिन्होंने भारतीय वैश्विक परिषद में 53वां सप्रू हाउस व्याख्यान दिया। महामहिम, आपके व्याख्यान से आज के विश्व की स्थिति, ग्लोबल साउथ के लिए दृढ़ आकार लेने और अपने विचारों को व्यक्त करने की आवश्यकता, बहुपक्षवाद का महत्व और इसे मजबूत करने की आवश्यकता, लोकतांत्रिक परंपराओं को पोषित करने का मुख्य महत्व और भारत एवं चिली द्वारा व्यक्तिहत रूप से और साथ मिल कर इस गतिशीलता में किए जा सकने वाले योगदान के बारे में जानकारी मिली।

चिली और भारत, भले ही भौगोलिक और समय क्षेत्रों में अलग- अलग हों, परंपरागत साझेदार हैं और तेज़ी से बदलते वैश्विक परिदृश्यों का सामना कर रहे हैं। साझा आदर्शों, समृद्धि और विकास के लिए अलग- अलग पहलुओं पर दोनों देशों के बीच सहयोग सर्वोपरि होगा। महामहिम, आपके नज़रिए लैटिन अमेरिका की एक प्रमुख आवाज़ हैं और वे निश्चित रूप से हमारे अंत में सोच को प्रेरित करेंगे। महामहिम, आपके व्याख्यान ने कुछ सवाल पैदा किए हैं, जिन्हें मैं आपकी अनुमति से पूछता चाहती हूँ। क्या मैं पूछ सकती हूँ?

मेरा पहला सवाल चिली और विश्व व्यवस्था पर है। जैसा कि आपने भी कहा, दुनिया उभरती वैश्विक चुनौतियों जैसे युद्ध, असमानता, क्षेत्रों और देशों के बीच विभाजन के साथ गहन बदलावों से गुज़र रही है। आईसीडब्ल्यूए में, हम एक नई विश्व व्यवस्था के उद्भव के बारे में बात कर रहे हैं, जहाँ बहुध्रुवीयता पनपती है और सत्ता के परंपरागत बीज़ मरते हैं और नए बीज उगते हैं। संक्रमण के इस चरण के दौरान

चिली की भूमिका निश्चित रूप से प्रभाव डालेगी। चिली वैश्विक घटनाओं को कैसे देखता है और स्वयं को कैसे स्थापित करता है?

महामहिम, श्री गेब्रियल बोरिक: चिली में हम दुनिया के विभिन्न उतार- चढ़ावों से निपटने के लिए एक सिद्धांत के रूप में जो मानते हैं और विशेष रूप से वर्तमान में हो रहे अधिक जटिल युद्धों से निपटने के लिए, हमें एक सुसंगत मानक बनाए रखना है। हमारे महाद्वीप में, कई बार देश- देशों से ज्यादा नेतृत्व- राष्ट्रपति के साथ परिस्थितिजन्य तरीके से सहानुभूति या निकटता के अनुसार स्वयं को संरेखित करते हैं। हमने जिस बात का बचाव किया है और जिस बात से मुझे लगता है कि हमारे देश को प्रतिष्ठा मिली है, वह यह है कि लोकतंत्र और तानाशाही के बारे में बात करते समय हम वामपंथ और दक्षिणपंथ के बीच भेद नहीं करते। हम किसी भी ऐसे धर्म के बीच भेद नहीं करते जो आतंकवाद या नरसंहार को उचित ठहराता हो।

बल्कि, हम सिद्धांतों के लिए खड़े हैं और जैसा कि मैंने दूसरे अवसरों पर कहा है, जैसे, मध्य-पूर्व में युद्ध के संबंध में, विशेष रूप से इज़रायल और फिलिस्तीन के बीच, हम हमास की आतंकवादी बर्बरता और फिलिस्तीनी नागरिकों के खिलाफ इज़रायल द्वारा किए जा रहे नरसंहार के बीच चयन करने से पूरी तरह से इनकार करते हैं। हम मानवता के पक्षधर हैं। राजनीतिक दृष्टि से मानवता का अर्थ है, जैसा कि विश्व के अधिकांश देशों द्वारा पुष्टि की गई है, दो- राष्ट्र समाधान जिसमें दो देश शांति और सुर६ के साथ एक साथ रह सकते हैं। यही बात उन लोगों पर भी लागू होती है जो लाल और काला झंडा उठा लेते हैं, जिसने एक समय में कई पीढ़ियों को प्रेरित किया है और यहाँ तक कि चिली के लोग निकारागुआ में लड़ने लग गए औऱ आज हम देखते हैं कि यह कैसे एक पारिवारिक तानाशाही में बदल गया है।

हमें न केवल इसकी आलोचना करने में कोई शर्म आती है न ही कोई अस्पष्टता है बल्कि इसकी निंदा करने और उन लोगों को समर्थन देने में भी, जिन्हें राज्यविहीन घोषित किया गया है और उनकी राष्ट्रीयता से वंचित कर दिया गया है। यही कारण है कि दुनिया में अलग- अलग युद्धों- जैसे यूक्रेन पर रूस का हमला, पर, चिली की स्थिति- मैं समझता हूँ कि वास्तविक राजनीति के कुछ सिद्धांत हैं जिन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए लेकिन हम जिस चीज़ का बचाव करते हैं वह है अंतरराष्ट्रीय कानून का सम्मान। जब कोई देश किसी दूसरे देश पर उसके भूभाग के हिस्से को हड़पने के उद्देश्य से एकतरफा आक्रमण करता है जिसे कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त है, तो हम कहते हैं- इसकी अनुमति नहीं दी जा सकती। और दुर्भाग्य से हम पाते हैं कि कई युद्धों की स्थिति बन रही है। वर्ष 1914 में, फ्रांज़ फर्डिनेंड की हत्या से पहले, युद्ध की आशंका थी। मैं हाल ही में 1938 में लिखी एक किताब पढ़ रहा था, जिसमें यह अनुमान लगाया गया था कि जल्द ही कोई युद्ध शुरू होने वाला है। भूतपूर्व ब्रिटिश प्रधानमंत्री चेम्बरलेन के बारे में सोचना बहुत

मुश्किल है, जब वे म्यूनिख़ से कागज़ का एक छोटा सा टुकड़ा ले कर आते हैं जिसे वे शांति के गारंटी के तौर पर पेश करते हैं और चेकोस्लोवाकिया के सुडेटेनलैंड को नाज़ी जर्मनी को सौंप देते हैं।

जब अंतरराष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों की बात आती है तो हमारे विचार में, विस्तारवादी भावनाओं के लिए रियायतों के लिए कोई जगह नहीं है- या होनी भी नहीं चाहिए। देशों को एक- दूसरे का सम्मान करना चाहिए, सीमाओं को एक- दूसरे का सम्मान करना चाहिए और जिस तरह से हम एक- दूसरे से संबंध रखते हैं वह व्यापार और संस्कृति के माध्यम से होना चाहिए, युद्ध के माध्यम से नहीं।

लैटिन अमेरिका, विशेष रूप से- अगर मुझे सही से याद है तो, अगर मैं गलत रहूऐ तो मेरे तथ्यों में कृपया सुधार करें- उसका आखिरी युद्ध चाको युद्ध था, कम- से- कम दक्षिण अमेरिका में, और गृह युद्धों को छोड़कर। इसलिए हमें शांति की इस परंपरा पर गर्व है। लेकिन शांति कि यह परंपरा उन साझा नियमों पर आधारित है जो हमने स्वयं को दिए हैं और जब यह तय करने की बात आती है कि कौन अंतरराष्ट्रीय समझौतों का उल्लंघन करता है या मानवाधिकारों की रक्षा- जो हमारे विचार में अप्रतिबंधित होनी चाहिए- तो दोहरे मापदंड नहीं अपनाए जाते हैं।

नूतन कपूर महावर: आपकी प्रतिक्रिया के लिए धन्यवाद, महामहिम। यह महत्वपूर्ण है कि न्यायपूर्ण विश्व शांति के लिए, संवाद और कूटनीति को प्राथमिकता दी जाए। विश्व के विभिन्न हिस्सों से आकलन है कि दुनिया पहले से ही बहुध्रुवीय है। सत्ता में बदलाव और बदलते समीकरण ध्यान देने योग्य हैं जो फिर से दीर्घकालिक स्थिरता और पूर्वानुमान के लिए राष्ट्रों एवं क्षेत्रों के बीच अधिक- से- अधिक सहयोग की मांग करते हैं।

इसके अलावा, संसाधनों, प्रतिभा और दृढ़- संकल्प की प्रचुरता के साथ, आप महामहिम से सहमत होंगे, लैटिन अमेरिका को एक नई विश्व व्यवस्था के उद्भव में अपना योगदान देना होगा। मेरा अगला सवाल लैटिन अमेरिकी क्षेत्र से जुड़ा है। जब आप ग्लोबल साउथ में सहयोग के बारे में बात करते हैं तो अक्सर एक अखिल लैटिन अमेरिकी नज़रिए पर सवाल उठता है जिसका संदर्भ वैश्विक मामलों में एक एकजुट कर्ता के रूप में लैटिन अमेरिका है। आपने अपने पिछले उत्तर में भी एकजुटता का उल्लेख किया था। हालाँकि, चूँकि क्षेत्र में मतभेद हैं तो वे कौन से पहलू हैं जिन पर आपको लगता है कि एक क्षेत्र के रूप में लैटिन अमेरिका को अधिक समन्वय और एकता प्राप्त करने के लिए संलग्न होना चाहिए?

हालाँकि, लैटिन अमेरिका में हम उस दिशा में आगे नहीं बढ़ा पाए हैं। इसका संबंध शायद हमारे संविधान की जादुई यथार्थवाद की विशेषताओं से हैं। एक शक्षेत्र के रूप में हमारे संविधान से, नहीं, एक राजनीतिक संविधान से भी नहीं। यह कुछ ऐसा है जिस पर हमें कार्रवाई करके काबू पाना है। मैं विनम्रतापूर्वक मानता

हूँ कि धीरे- धीरे हम इस दिशा में प्रगति कर रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण पहलों में से एक जिसे हम हासिल करने जा रहे हैं और जिसे हम ठोस बना रहे हैं वह है बायोसेनिक कॉरिडोर, जिसमें अर्जेंटीना, पैराग्वे, ब्राज़ील और चिली हैं। हमने बोलीविया के साथ संबंधों को सामान्य बनाने या सुधारने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की है। हम दोनों देशों के बीच बहुत समय से संबंध अच्छे नहीं चल रहे थे। प्रशांत गठबंधन, जो परिस्थितियों के कारण.....

मैक्सिको और इक्वाडोर के बीच और मैक्सिको एवं पेरू के बीच भी खेदजनक परिस्थितियों ने प्रशांत गठबंधन को कमज़ोर कर दिया है लेकिन यह समन्वय के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान था। ब्राज़िलिया की सहमति ने हमें लैटिन अमेरिका में हमारे सामने आने वाले मुख्य संकटों में से एक, जो कि अंतरराष्ट्रीय संगठिक अपराध है, के सामने पुलिस मामलों में अधिक समन्वय स्थापित करने में मदद की है। लेकिन अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। कुछ हफ्ते पहले हम उरुग्वे में कोलंबिया, उरुग्वे, ब्राज़ील के राष्ट्रपतियों से मिले थे और फिर हमने ओएएस के संबंध में संयुक्त स्थिति लाने के लिए कुछ अन्य लोगों को शामिल किया। संभावनाओं में से एक यह है कि संयुक्त वार्ता को पुनः आरंभ किया जाए, जिससे हमें संयुक्त स्थिति प्राप्त करने में मदद मिलेगी, जैसे, बेलेम डू पारा में होने वाले सीओपी पर चर्चा के लिए।

इस 2025 के दौरान, पेरिस समझौतों को अपडेट करना, जिस तक हम अपने अस्तित्व की कीमत पर नहीं पहुँच रहे हैं। इसलिए, मेरे पास कोई ठोस जवाब नहीं है क्योंकि यह कुछ ऐसा है जो मेरी सरकार के आखिरी साल में मुझसे परे हैं लेकिन मुझे यह भी उम्मीद है कि जब इस स्थान को छोड़ने की मेरी बारी आएगी, तो मैं लैटिन अमेरिका में अधिक एकता के लिए काम कर पाऊँगी, उस बयानबाज़ी से परे जो हमारे महाद्वनीप की खासियत है। जैसा कि हमारे महान कवि विसेंट ह्यूडोब्रो ने कहा है- आश्रित तब मर जाता है जब वह जीवन नहीं दे पाता। हम लैटिन अमेरिका में आश्रितों के हत्यारे रहे हैं।

नूतन कपूर महावर: धन्यवाद महामहिम। सहयोग के कई पहलू हैं और इसमें चुनौतियाँ एवं मुद्दे हो सकते हैं जिनके लिए कई बार संवाद और चर्चा की आवश्यकता होती है। एक क्षेत्र के रूप में, लैटिन अमेरिका ग्लोबल साउथ के लिए एक शक्तिशाली आवाज के रूप में महत्वपूर्ण रहा है, चाहे वह संयुक्त राष्ट्र हो या अन्य बहुपक्षीय निकाय। आशावाद है और निश्चित रूप से लैटिन अमेरिका जैसा कि आपने स्वयं कहा कि आप बहुत आशावादी हैं और निश्चित रूप से लैटिन अमेरिका भविष्य के विकास में एक महत्वपूर्ण नेतृत्व की भूमिका निभाता रहेगा। अतीत में इस क्षेत्र के अनोखे विचार वैश्विक टेम्पलेट बन गए हैं और इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह नए जोश के साथ जारी रहेगा। महामहिम, क्या मैं एक और सवाल पूछ लूं?

अच्छी बात है, धन्यवाद। मेरा अगला सवाल आपकी घरेलू पहलों से जुड़ा है। महामहिम, चिली महिली सशक्तिकरण के एक उदाहरण के रूप में उभरा है, भले ही हम सभी जानते हैं कि महिलाओं को पूरी दुनिया में भेदभाव, लैंगिक हिंसा और समान अवसरों तक पहुँच में कमी का साम ना करना पड़ा है। क्या आप हमें बता सकते हैं कि आपकी अध्यक्षता ने महिलाओं को सुरक्षा, अवसरों तक पहुँच और स्वास्थ्य के मामले में किस प्रकार सशक्त बनाया है? हमने सुना है कि आपने नारीवादी विदेश नीति भी लागू की है।

महामहिम, श्री गेब्रियल बोरिक: प्रश्न के संदर्भ का लाभ उठाते हुए, मैं चाहूँगा कि यदि आप मुझे अनुमति दें तो मैं अपनी महिला मंत्री से अनुरोध करूंगा कि आपके इस प्रश्न का उत्तर वे दें।

नमस्कार। मुझे उत्तर देने का मौका देने के लिए अध्यक्ष महोदय आपका बहुत- बहुत धन्यवाद। मैं बस ऐसे ही लिख रही थी....मैंने कोई टिप्पणी नहीं की कि वास्तव में सभ्यतागत प्रगति में से एक है जिसका हमें बहुपक्षीय रूप से बचाव करना चाहिए, जिसमें महिला अधिकार और हमारी पूरी मानवता शामिल है। हम चिली के महिला मंत्रालय के प्रतिनिधि के रूप में चिली के प्रतिनिधिमंडल के साथ आए हैं, यह जानते हुए कि हमारी अलग- अलग संस्कृतियों और इतिहास में, जैसे, हमारी प्रगति एक जैसी ही है। काम करने के लिए, हम ईरान या क्यूरी की नीतियों के प्रशंसक हैं, और उदाहरण के लिए ग्रामीण सशक्तिकरण की नीति के भी।

और, इस अर्थ में, एक बुनियादी बात है, हमने स्पेन, ब्राज़ील और उरुग्वे की सरकारों के महिला मामलों के मंत्रियों के साथ इस पर चर्चा भी की है जिसका संबध ठीक उसी घटना से है जिसे बदला नहीं जा सकता, चाहे कुछ लोग इसे कितना भी बदलना चाहें। उदाहरण के लिए, महिलाओं को वेतनभोजी काम में निर्णायक रूप से शामिल करना, जैसे, राजनीतिक नागरिकता में हमारे समावेश के साथ। यह केवल मतदान के बारे में नहीं है, बल्कि, जैसा कि हम दोनों देशों में अच्छी तरह जानते हैं, शिक्षा के बारे में भी है। बेशक, इन अंतरालों को भरना अभी भी बहुत मौलिक है...और अंततः, हमारे सामने एक बड़ी चुनौती है। महिलाएं सार्वजनिक क्षेत्र में निर्णायक रूप से प्रवेश कर चुकी हैं, राजनीतिक निर्णयों में शामिल हो चुकी हैं, जैसा कि हम आज व्यापार प्रतिनिधिमंडल में हैं, निजी उद्यम और स्टार्टअप में भी। लेकिन हमें अपनी रणनीति और देखभाल कूटनीति के माध्यम से जो हमने प्रस्तावित किया है, उसे बदलने की जरूरत है।

और जनसांख्यिकी परिवर्तनों के मद्देनज़र एवं जन्म दर में गिरावट के बिना महिला कार्यबल को बनाए रखने के लिए स्थिरता हेतु गठबंधन करने, हमें पुरुषों को देखभाल और बच्चों के पालन- पोषण की भूमिकाओं में शामिल करना होगा और मेरा मानना है कि वैश्विक सभ्यतागत प्रगति के रूप में महिलाओं के अधिकारों की प्राप्ति की रक्षा करने में यह हमारी मुख्य चुनौती है।

नूतन कपूर महावर: धन्यवाद। यह महत्वपूर्ण है कि न्यायपूर्ण और समतापूर्ण विश्व के लिए महिलाओं को उनका समान हिस्सा मिले। मुझे यकीन है कि आपकी पहल, चिली की पहल, चिली जैसी ही सामाजिक-

आर्थिक स्थिति वाले दूसरे देशों के लिए महिला सशक्तिकरण का उदाहरण साबित होगी। महोदय, एक आखिरी सवाल, अगर आप अनुमति दें तो। मेरा आखिरी सवाल आपके दौरे से संबंधित है। आपके दौरे के दौरान कौन सी प्रमुख चर्चाएं और कार्यक्रम हुए और दोनों देशों के लिए कौन से महत्वपूर्ण फैसले लिए गए? आपको भारत का कौन सा पहली सबसे अधिक विचारोत्तेजक या आकर्षक लगता है?

महामहिम, श्री गेब्रियल बोरिक: जब... जब मैं अपने 23 घंटे लंबे सफर की समीक्षा कर रहा था, यह दौरे की तैयारी कर रहा था, तो एक बात जो स्पष्ट थी या जिसे चिंताजनक माना गया था, वह थी सीपीए वार्ता शुरू करने के संयुक्त विश्वास के संबंध में वर्तमान अनिश्चितता और प्रधानमंत्री मोदी के साथ पहली बैठक में, विदेश मंत्री के साथ और आज सुबह वित्त मंत्री के साथ इस बिंदु को सुलझाने में सक्षम होने के बाद, मुझे लगता है कि यह एक जबरदस्त सफलता रही है कि हम इस पर एक समय- सीमा भी निर्धारित कर सके, इसलिए कम- से- कम यह कुछ ऐसा है जिसे लेकर मैं बहुत खुश हूँ और यह मुख्य उद्देश्यों में से एक था लेकिन केवल इतना ही नहीं, इन समयों में, जैसा कि मैंने कहा है, जहाँ वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के बारे में बहुत अनिश्चितता है, हमारे उत्पादों के लिए नए बाज़ार खोलने में सक्षम होना बहुत महत्वपूर्ण है।

मैं मैक्सिको पैचेको को देख सकता हूँ, हमारे प्रमुख हैं, नेशनल कॉपर कंपनी कोडेल्को में हमारे मैनेजर हैं, वहाँ दूर बैठे हैं। यहाँ आने से पहले मैंने उन्हें जो निर्देश दिए थे और जिस पर हमने चर्चा की, उनमें से एक यह था कि टैरिफ वृद्धि के जवाब में स्टॉक में वृद्धि के कारण इन सामयिक मूल्य वृद्धि से परे हमारे तांबे के निर्यात में विविधता लाने के रास्ते ढूंढ़ें। और हाँ, दूसरे आयाम में, हम मानते हैं कि चिली के पास सांस्कृतिक और शैक्षिक क्षेत्रों में योगदान करने के लिए बहुत कुछ है। इसलिए, शायद इतना आम नहीं, मैंने हमारे संस्कृति मंत्री से कहा कि वे हमारे साथ मिलकर नए स्थान खोलें और चिली को फिल्मांकन के लिए एक अविश्वसनीय स्थान के रूप में प्रस्तुत करें, साथ ही हमारे सांस्कृतिक उद्योग को बढ़ावा दें और संस्कृति में हमारे द्वारा किए जा रहे कार्यों को बताएं।

मुझे बहुत खुशी हुई कि जब मैं एफएएचसी (FAHC) विमान में चढ़ा, जो हमें लेकर आया, तो चालक दल के सदस्यों ने मुझसे कहा, "यह किसी भी राष्ट्रपति द्वारा साथ लाया गया अब तक का सबसे बड़ा प्रतिनिधिमंडल है।" एक दूसरे के लिए अजनबियों को एक दूसरे से बात करते हुए देखना और एक दूसरे कए अनुभवों के बारे में जानना अविश्वसनीय रूप से मूल्यवान है, क्योंकि अलग- अलग लोगों को एक साथ लाना किसी भी सरकार के लक्ष्य का हिस्सा होता है। इसलिए, मेरे नज़रिए से, इस दौरे के अभी केवल दो दिन हुए हैं, और यह मेरे लिए बहुत फायदेमंद रहा है। मैं व्यक्तिगत रूप से भारत के इतिहास के बारे में थोड़ा और जानना चाहता हूँ और इसे सम्मानपूर्वक तरीके से समझना चाहता हूँ।

आध्यात्मिकता को सूचित करने वाले सिद्धांत जो विश्व को समझने के तरीके में बहुत महत्वपूर्ण हैं। आस्तिक बनने या कुछ और करने के लिए नहीं बल्कि इस सभ्यता को बेहतर तरीके से समझने में सक्षम

होने के लिए।

नूतन कपूर महावरः आपका बहुत- बहुत धन्यवाद, महामहिम। भारत और चिली के बीच घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंधों का साझा इतिहास रहा है। हमारे बीच मधुर संबंध हैं और दोनों देश एक- दूसरे को स्थिर साझेदार मानते हैं। हमें विश्वास है कि आपकी भारत यात्रा हमारे संबंधों को नई प्रगति देगी और द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय मंचों पर हमारे संबंध और मजबूत होंगे।

इसके साथ ही, मित्रों, हमारा प्रश्नोत्तर सत्र अब समाप्त होता है। मुझे विश्वास है कि हमारे श्रोताओं को आपके व्याख्यान से बहुत लाभ हुआ होगा और उन्हें सारगर्भित विचार प्रदान किया होगा। अब मैं अपने सहयोगी डॉ. अर्नब चक्रवर्ती का रुख करती हूँ।

अर्नब चक्रवर्ती: धन्यवाद महोदया। मैं इस अवसर पर चिली गणराज्य के हमारे माननीय राष्ट्रपति महामहिम श्री गेब्रियल बोरिक के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। इस विचारोत्तेजक व्याख्यान ने हमारे देशों के बीच सहयोग पर नए नज़रिए प्रदान किए हैं। महामहिम, आपकी दृष्टि सहयोग के आदर्शों और आज विश्व में हो रहे ऐसे बदलावों के दौरान भी मजबूती से खड़े रहने के साथ प्रतिध्वनित होती है। ग्लोबल साउथ की आवाज़ों का पक्ष लेते हुए हमारे देश इतिहास, परंपरा और संस्कृति समृद्ध हैं जो विशाल भौगोलिक दूरी के बावजूद हमें एक साथ बांधने वाले मजबूत बंधन साझा करते हैं।

प्रसिद्ध चिली कवि और नोबेल पुरस्कार विजेता पाब्लो नेरुदा के शब्दों में, पोद्रान कोर्टार टोडास लास फ्लोरेस, पेरो नो पोद्रान डेटेनर ला प्रिमावेरा। जिसाक अर्थ है कि कोई सभी फूल काट सकता है फिर भी वसंत आएगा। भारतीय वैश्विक परिषद की ओर से मैं आपके व्याख्यान के लिए महामहिम और हमारे सम्मानित श्रोताओं को उनके धैर्य के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। मैं इस अवसर पर उन सभी सहायक कर्मचारियों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनकी कड़ी मेहनत और समर्पण ने आज के कार्यक्रम की सफलता में योगदान दिया है।

आप सभी को हम अपने साथ हाई टी में शामिल होने का हार्दिक निमंत्रण देते हैं। गणमान्य व्यक्तियों के लिए उपकक्ष और छात्रों के लिए ऑडिटोरियम में व्यवस्था की गई है। मैं आप सभी से अनुरोध करता हूँ कि जब तक गणमान्य व्यक्ति ऑडिटोरियम से बाहर न निकल जाएं, कृपया अपने स्थान पर बैठे रहें। इसके साथ ही आज का यह कार्यक्रम समाप्त होता है। बहुत- बहुत धन्यवाद।